रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके.... ॐ पिताश्री 12/7/64

ओम् शांति। अब आत्मा जान गई बाप को। बच्चे जानते हैं, एक ही शिवबाबा है, जिसको कोई भी सूक्ष्म वा स्थूल शरीर नहीं मिलता है। ब्र०वि०शं० का भी सूक्ष्म शरीर दिखलाते हैं। नाम भी है। शंकर नाम है। बच्चे समझते हैं, उनमें आत्मा है, सूक्ष्म शरीर है। इस समय तुम बच्चे त्रिलोकीनाथ बनते हो। ल०ना० को कोई त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे। ल०ना० कोई त्रिलोकी (मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन) को नहीं जानते। हर एक बात बुद्धि से तय करने की है– यह राइट है या रॉंग है। सिर्फ जो सुना ''सत्–2'' कहना, यह तो भक्तिमार्ग है। यहाँ तो अच्छी रीत समझना है– बरोबर ब्र०वि०शं० को सूक्ष्म शरीर है, सिर्फ एक ही शिव निराकार है। मंदिर तो उनके अनेक प्रकार के बने हुए हैं और नाम भी अनेक रख दिए हैं। ढेर मंदिर हैं, जहाँ लिंग रखा हुआ है। बॉम्बे में है, इसको बाबरी नाथ कहते हैं। है तो एक ही शिव। विलायत आदि तरफ भी बहुत ही नाम रखे हुए हैं। अभी बच्चे जानते हैं, हम आत्मा हैं। प०पि०प० हम बच्चों को समझा रहे हैं, तीनों लोकों का ज्ञान दे रहे हैं। इस समय तुम त्रिलोकीनाथ हो; क्योंकि तुम जानते हो। जब तक कोई जाने नहीं तो नाथ बन कैसे सके? कृष्ण को भी त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे। सिर्फ ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण ही त्रिलोकीनाथ है, जिनको तीनों लोकों की नॉलेज है। नॉलेजफुल, ब्लिसफुल (बाप) है। वो निराकार बाप हमको नॉलेज दे रहे हैं। कोई साकार मनुष्य को गॉड नहीं कहा जा सकता। यहाँ तो सर्वव्यापी कह देते हैं, सब गॉड ही गॉड हैं। अभी तुम समझ गए हो, गॉड फादर एक ही निराकार शिव है, जिसकी पालना कभी नहीं होती, और सबकी पालना होती है। आत्मा छोटे शरीर में आती है गर्भ में तो अपना अंगूठा चूसती है। शिवबाबा को अंगूठा नहीं चूसना पड़ता। शिवबाबा कहते हैं, मैं तो गर्भ में नहीं आता हूँ, और तो सब गर्भ में जाते हैं और उनकी पालना भी होती है। माँ जैसा खाना आदि खाती है, कोई खट्टी चीज़ आदि खाती है तो उसका असर बच्चे पर पड़ता है। खट्टी चीज़ से दूध में खराबी होती है तो बच्चे को नुकसान होता है। शिवबाबा पूछते हैं, हमारी तुम पालना कैसे करेंगे? हमको तो कहते ही हैं सारी सृष्टि का पालन कर्ता। तो मेरे ऊपर कोई है नहीं। इन बातों को अच्छी रीत समझना चाहिए। विचार–सागर–मंथन कर प्वाइंट्स निकालनी चाहिए। बरोबर शिवबाबा, बाबा है। इनको माशूक भी कहा जाता है। सब मनुष्य मात्र आशिक हैं। उस माशूक की तुम सब सजनियाँ। वो साजन ठहरा। साजन है निराकार। कोई आकार व साकार को साजन नहीं कहा जा सकता। सभी का माशूक एक निराकार बाबा है। निराकार आत्माएँ अपने माशूक को याद करती हैं। याद क्यों करते हैं? ज़रूर कुछ न कुछ तकलीफ है। सभी भगत भगवान को याद करते हैं। यह आशिक–माशूक निराकारी हैं, वो जो साकारी आशिक–माशूक होते हैं, उन्हों की भी महिमा है और वे बहुत थोड़े होते हैं। एक/दो के शरीर पर फिदा होते हैं। उनका कोई विकार के लिए प्यार नहीं होता है, सिर्फ एक/दो को देखते रहें। देखने बिगर सुख न आवेगा। शरीर को याद करते हैं। कहाँ भी बैठे रहेंगे, कहेंगे– हमारे सामने माशूक खड़ा है। उनको सा० होता है। क्यों? वो पवित्रता का प्रेम है। शरीर की भी शोभा होती है ना! विकार के लिए नहीं, एक/दो को देख खुश होते हैं। खाते हुए उनकी याद आए सब खाना भूल जावेगा, उनको ही देखते रहेंगे। वो भी थोड़े होते हैं। यहाँ भी सच्चे–2 आशिक उस माशूक (शिवबाबा) के कितने थोड़े बनते हैं, जो पास विद ऑनर्स होते हैं। 8 दानों की कितनी महिमा है। तो जब भक्तों को भगवान मिला है तो उनको कितना याद करना चाहिए। (बा)प कहते हैं– बच्चे, निरंतर मुझे याद करो; क्योंकि मेरे से तुमको बहुत सुख मिलना है। (ऐसे करके)

अल्प काल का सुख मिलता है, आपस में बहुत लव रहता है। यह फिर है बेहद के बाप से बेहद का लव। बेहद का प्यार एक में रहता है। बच्चे जानते हैं, इनका कोई शारीरिक नाम नहीं है। विष्णु के दो रूप ल०ना० तो पुनर्जन्म में आते हैं, पूरे 84 जन्म लेते हैं। बाकी 4 भुजा वाले कोई मनुष्य नहीं होते। तो ल०ना० की ज़रूर डिनायस्टी होगी। सतयुग आदि में ल०ना० का राज्य होगा तो ज़रूर प्रजा भी होगी। बुद्धि भी कहती है, सतयुग आदि में इतने होंगे, फिर वृद्धि होती जाती है। सतयुग आदि में ल०ना० का राज्य था, बरोबर जमुना के कण्ठे पर राधे–कृष्ण की राजधानी थी। गंगा–जमुना आदि ये तो बहुत नदियाँ हैं। नदी किनारे रहते हैं। यह जो दिखाते हैं सागर में द्वारका डूबी आदि, ऐसे कोई बात नहीं। न कोई सागर के किनारे देवताओं के गाँव होते हैं। यह बॉम्बे थोड़े ही होगी। फिर बॉम्बे आदि पुरतगेज़ों आदि को मिली थी। भले छोड़ जाते हैं तो भी उन्हों के साथ लव रहता है। अंग्रेज आदि गए हैं तो भी हिन्दुस्तान को मदद देते रहते हैं। अफ्रीका भी ब्रिटिश की है, तो वो मदद देते रहते हैं। आपस में उन्हों का लव है। वह बहुत माल ले गए हैं। वो लोग यहाँ सम्भाल करते थे, दुकानदारी करते थे, कमाई करते थे, तो अब मदद दे रहे हैं। सीलान में कहते हैं सीलानी ही रहेंगे। बाहर वालों को भगाते हैं; परन्तु भारत में तो हिन्दू–मुसलमान दोनों पुराने रहते आते हैं। ये हैं पुराने दुश्मन। अब उन्हों को कौन भगावें? यवनों और कौरवों की तो लड़ाई है। हम भी कौरव थे, अब पाण्डव बने हैं। दिखाते हैं, भाई–2 हैं। अभी हम अलग हो पड़े हैं। अंधे की औलाद अंधे, सज्जे की औलाद सज्जे। अब यह तुम्हारी बुद्धि में है। मोस्ट बिलवेड गॉड फादर है। क्राइस्ट को फादर नहीं कहेंगे। जानते हैं, क्राइस्ट मैसेंजर है। प०पि०प० ने इनको भेजा है। आते हैं निराकारी दुनिया से। उनको गॉड फादर नहीं समझते, प्रीसेप्टर समझते हैं। हिन्दुओं को पता नहीं हिन्दू धर्म कब और किसने स्थापन किया। हिन्दू धर्म तो है नहीं। आदि सनातन तो देवी–देवता धर्म है। आदमशुमारी में अगर हमसे कोई पूछे तो हम कहेंगे कि हम ब्राह्मण हैं इस समय। हम कोई हिन्दू थोड़े ही हैं। इस समय हम ही हैं ब्राह्मण ब्रह्मा मुखवंशावली; परन्तु तुम भल ब्राह्मण धर्म सुनावेंगे, फिर भी वह हिन्दू में डाल देंगे। स्वर्ग में तो आदमशुमारी होती नहीं; क्योंकि है ही एक देवी–देवता धर्म, तो पूछने की दरकार नहीं। यहाँ बहुत धर्म हैं इसलिए पूछते हैं। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। तो बुद्धि से बाप को याद करना है। वो है ही निराकार। इनका एक ही नाम है। ल०ना० तो 84 जन्म ले अनेक नाम धरावेंगे। ब्र०वि०शं० के भी आकारी चित्र देखने में आते हैं। शिव का कहाँ है? समझते भी हैं कि यह भगवान है। एक को भगवान समझ फिर दूसरे को भगवान कहना भी तो मूर्खता है। हम अपन को भगवान कहला नहीं सकते। आत्माएँ तो पुनर्जन्म (ले)ती हैं। ऐसे तो नहीं, बाप भी पुनर्जन्म लेते हैं। पुनर्जन्म विष्णु के दो रूप (ल०ना०) लेते हैं। अभी तुम तीनों लोकों को जानते हो; इसलिए तुम्हारा त्रिलोकीनाथ नाम है। जानने वाले ही नाथ होते हैं। तुमको अब त्रिलोकी का ज्ञान है। तुम ब्राह्मण ही जानते हो, और कोई भी जान न सके। कृष्ण भी त्रिलोकीनाथ नहीं है। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता, यह सिर्फ तुमको मिलता है; इसलिए तुम्हारा नाम बाला है। दिलवाला मंदिर में आदिदेव, आदिदेवी, शिवबाबा और तुम बच्चे हो; क्योंकि तुम अभी सर्विस करते हो। बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने। वो तुम बच्चों की मदद लेते हैं, जिसके एवज तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाप कहते हैं, जो–2 मेरा–2 मददगार बनते हैं, उन्हों को मैं जानता हूँ। ये तो कोई भी समझ सकते हैं। स्टूडेंट्स सब एक जैसे तो नहीं होंगे ना! बाबा की यह दुकान मनुष्य को देवता बनाने की फिर नम्बरवार हैं। महारथियों का सेन्टर ज़रूर अच्छा चलता होगा। समझेंगे, अच्छे सेल्समैन हैं शिवबाबा के। सब शिवबाबा के दुकान हैं। तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों का व्यापार करते हो, बाकी सब झूठ बोलते हैं। उन्हों की फिर महिमा कितनी है! अपन को ईश्वर कहते

हैं। तो इमीटेशन ईश्वर की कितनी महिमा है! और रियल ईश्वर को कोटों में कोई जानते हैं। बॉम्बे में एक चिमनयानंद गीता सुनाते हैं। कितना उनका मान है! यहाँ बाप कितना साधारण है! कितना फर्क है– सच और झूठ का। सच बताने वाला तो है बाप, बाकी सब झूठ ही झूठ हैं। बड़े ते बड़े झूठ बोलने वाले हैं गुरु लोग। मनुष्य समझते हैं, गुरु करने से हमारी सद्गति होगी। बाबा कहते हैं, ये गुरुलोग तो तुम्हारी दुर्गति करते हैं। वह है माया मत। माया तुमको भुलाए देती है। कह देते, तुम्हारा बाप ठिक्कर–भित्तर सबमें हैं। आसुरी मत कहते हैं, तुम्हारा श्रीमत देने वाला प०पि०प० सर्वव्यापी है। आगे तो बेअंत कह देते थे। रावण कौन है, कब से आए हैं, ये भी कोई नहीं जानते। रावण को वो लोग त्रेता में ले गए हैं, कृष्ण को द्वापर में ले जाते। सतयुग को जानते ही नहीं तो त्रेता से रावण का बुत बनाते आते होंगे। राम–सीता थे त्रेता में। वहाँ रावण की तो बात ही नहीं उठ सकती। है सब यहाँ की बात। यह तो एक गपोड़ा है। शास्त्र हैं झूठे। कोई को समझाओ तो कहते, यह बी.के. की कल्पना है। अब बच्चों को समझाया गया है, प्वाइंट्स निकलते हैं, वे धारण करने हैं। जहाँ भी हो, प्वाइंट्स मँगा कर पढ़नी चाहिए। ऐसे नहीं, फुर्सत नहीं। अरे, गॉडली स्टूडेंट्स कहें, हमको फुर्सत नहीं तो उनको क्या कहेंगे! कोई को धारण कैसे करा सकेंगे! इतनी अथाह प्वाइंट्स निकलती हैं, वो अगर मुरली न सुनेंगे अथवा न पढ़ेंगे तो धारण कैसे करेंगे? यह तो एज्युकेशन है ना। सुप्रीम टीचर पढ़ाने वाला एक है। अगर मुरली ही न सुनेंगे तो प्वाइंट्स सुना कैसे सकेंगे? यह तो बच्चे समझते हैं बाप जन्म–मरण रहित है, वो पुनर्जन्म नहीं लेते; परन्तु इनकी जयन्ती मनाते हैं। अभी तो शिव जयन्ती को भी खत्म करते हैं। तो अब कौन बतावे कि शिव का जन्म कैसे हुआ, क्या किया होगा। गीता में कृष्ण का नाम डाला है; परन्तु उसी रूप में तो आए न सके। कृष्ण को वैकुण्ठनाथ कहेंगे, न कि त्रिलोकीनाथ। तो वैकुण्ठ अथवा स्वर्ग यहाँ ही था। कृष्ण भी यहाँ था। राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर इनके साथ लव हो गया। ऐसे नहीं, राधे–कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं। राधे–कृष्ण कोई भाई–बहन नहीं थे। दोनों अलग–2 अपनी राजधानी में थे। बच्चों ने सा० किया है– कैसे स्वयंवर होते हैं। बाबा ने शुरू में तुमको बहुत बहलाया है। अकेले ही अंदर भट्ठी में पड़े थे, कोई मित्र–संबंधी आदि न था। तो बाबा ने बहुत बहलाया। फिर भी पिछाड़ी में बहुत देखेंगे। समझेंगे, हम जैसे वैकुण्ठ में बैठे हैं। आफत के समय मनुष्य हैरान होते हैं। इनको कहा जाता है अति खूनी नाहक। दुनिया नहीं जानती। ऐसे भी नहीं, कौरव गवर्मेन्ट कोई (मत) लेगी। इन्हों का तो विनाश होना है। तुम अविनाशी बाप से अविनाशी पद पाए रहे हो। भल प्रजा में आए तो भी अहो सौभाग्य! वहाँ सुख ही सुख है, वहाँ दुख ही दुख है। अब बाप पढ़ाने आए हैं तो पढ़ना चाहिए ना! भल काम है, कम कार डे दिल यार डे, बुद्धियोग बाप के साथ लगा हुआ है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए याद उनको करना है। अरे, बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, क्या समझते हो! 21 जन्म राजाई करते हो, कोई फिक्र की बात नहीं। यहाँ तो देखो, मनुष्य को फिक्र कितना रहता है। वहाँ फिक्र होता नहीं। तुम वहाँ प्रालब्ध भोगते हो; परन्तु वहाँ यह भी पता नहीं पड़ता। यह नॉलेज तुमको अभी है कि हम अविनाशी बाप से वर्सा ले रहे हैं, फिर ऑटोमैटिकली हम राजधानी का वर्सा लेते रहेंगे। ऐसे नहीं कि दान–पुण्य से हम राजा बनेंगे। नहीं, इस समय के पुरुषार्थ की वह प्रालब्ध है। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए, जिससे 21 जन्मों की प्रालब्ध बनती है। वहाँ पुरुषार्थ, प्रालब्ध की बात होती नहीं। वहाँ कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, जिसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े। सब धनवान हैं। यहाँ मनुष्य पढ़ते हैं कि जज बने, डॉक्टर बने। वहाँ तो न जज है, न डॉक्टर है। वहाँ कोई पाप करते ही नहीं। वहाँ कोई चोर–चकार होगा नहीं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। कोई (बात)

की परवाह नहीं रहती। (अन्न आदि) पर पैसे लगते नहीं। यहाँ भी बाबा के होते, 8–10 आने तब अनाज (मिलता), तो उनसे आगे क्या होगा! अब तो कितनी महँगाई है। अजन कितनी महँगाई होगी, फिर सस्ताई हो जावेगी। अभी देखो, (सोना) है नहीं। गवर्मेन्ट को ..... बाप से अगर राय ले तो हम उनको कहे कि..... ..... अनुसार सब कुछ आपको मिलना है। उनकी मदद से तुमको राजधानी मिलनी है। दो बन्दर लड़ते हैं, माखन तुमको मिलता है। दुनिया थोड़े ही जानती है– तुम्हें पढ़ाने वाला कौन है। यह है गुप्त वेश में। तुमको एक सेकेण्ड में वैकुण्ठ की राजधानी दे देते हैं। खुदा दोस्त की बात है ना! यह महिमा उनकी है। त्वमेव माता–पिता, बन्धु–सखा है ना। सेकेण्ड में दिव्य दृष्टि दे और वैकुण्ठ में रास करने लग पड़ते। मनुष्य लोग फिर जादू समझ बिगड़ पड़ते हैं। जादूगर तो है ना। कृष्ण कोई जादूगर, सौदागर नहीं था। यह तो बाप है ना। सौदा देते हैं, कखपन लेकर रिटर्न में क्या देते हैं! अभी तो तुमको सब कुछ छोड़ना है। करनीघोर को देते हैं ना। अभी तुम सब मरने वाले हो। जितना अपना बैग–बैगेज इन्श्योर करना हो इतना करो। यहाँ प्रत्यक्षफल का सा० होता है। तुम अब गॉडली स्टूडेंट हो, प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने वाले हो। शिवबाबा कहते हैं, मैं तुम बच्चों के सामने बैठा हूँ। हूँ निराकार, यह शरीर लोन लिया है। तुम आत्मा भी नंगे आए थे, अब मैं फिर लेने आया हूँ। सबको नंगे ही चलना है। इस शरीर का भान छोड़ दो, अपन को आत्मा निश्चय करो। बाप ने समझाया, आशिक–माशूक थोड़े होते हैं, यहाँ भी थोड़े हैं। ऐसे नहीं, हम कैसे होंगे? अरे, मम्मा–बाबा कहते हो, फॉलो करो ना! पेट को तो ज़रूर दो रोटी चाहिए। यहाँ तो बैगर लाइफ में रहना है। पुरानी चमड़ी है, अशरीरी हो रहना है। बहुत मीठी बातें हैं। रोज़ पढ़ाते रहते हैं तो ज़रूर प्वाइंट्स हैं ना। मुरली तो कहाँ भी पढ़ सकते हो; परन्तु बाबा डायरैक्शन भिन्न–2 देते रहते हैं। हर एक का कर्मबन्धन अपना है। अपना पोतामेल जब बतावे तब तो बाबा डायरैक्शन दे कि तुम ऐसे करो। समझाना भी अलग–2 है; क्योंकि हर एक की बीमारी अलग–2 होती है। कोई को सर्वव्यापी की बीमारी होगी, कोई को नेचरक्योर की होगी। हर एक घमण्ड अपना दिखावेंगे; इसलिए अकेला समझाना ठीक होता है। समझाना है, तुम आधा कल्प के रोगी हो; इसलिए अलग–2 नब्ज़ देखनी पड़ती है। सबके लिए एक ही दवाई नहीं (हो) सकती। कोई मिलिट्री की सर्विस में है, कोई किस सर्विस में है। अच्छा, बच्चे कोई भी हालत में मुरली का आधार ज़रूर लो। 7 रोज़ कभी कोई देते नहीं। चिट्ठी आए, किसको चिट्ठी लिखी, पूछा जाता है– चिट्ठी भी क्यों पढ़ी? क्यों जवाब दिया? तुम तो भट्ठी में हो ना! उस दुनिया की हवा भी न आनी चाहिए। तो भी रात को यहाँ नहीं रह सकते। खिलाए–पिलाए, बिठाए सकते हैं। रात में जाकर अपने स्थान पर रहे हैं। आजकल तो ठगी भी बहुत है। बदमाश आए बैठ जाते हैं; इसलिए बड़ी जाँच रखनी पड़ती है। माया नाक से पकड़ लेती है। बाबा समझाते हैं– बच्चे, मुरली ज़रूर पढ़ना। रात्रि का 12 तक तो गंदा टाइम होता है। शाम को और सवेरे को टाइम अच्छा है। रात को सवेरे सो जाओ, फिर दो बजे उठो। वह टाइम फर्स्ट क्लास है। उस समय मुरली बैठ पढ़ो। रात को ... कर सोते हैं। अच्छा, 3 बजे, 4 बजे उठो। कैसे बच्चियाँ तो छुपा–2 कर भी मुरली पढ़ते हो। पति लोग मुरली भी पढ़नी न देते हैं। मुरली देख (तोड़) डालते। विख है माई–बाप का वर्सा। जैसे अमली अमल बिगर रह न सके। आजकल फिर कहते, विख, ज़हर, मूत। नानक ने भी कहा है– मूत पलीती कपड़ धोए। यहाँ तुमको मिलता है अविनाशी ज्ञान रत्नों का वर्सा, जिससे तुम 21 जन्म लिए सदा सुखी बनते हो। तो इसके लिए खूब पुरुषार्थ करना चाहिए। अच्छा, मात–पिता, बापदादा, मीठी–2 मम्मा का सिकीलधे ज्ञान सितारों प्रति यादप्यार।